ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 150-155
www.allresearchjournal.com
Received: 04-02-2023
Accepted: 07-03-2023

नेहा कुमारी
शोधार्थी, (हिन्दी विभाग), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
नेहा कुमारी
शोधार्थी, (हिन्दी विभाग), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

इस जिंदगी के उस पार: किन्नर विमर्श का आधार

नेहा कुमारी

सारांश
समकालीन साहित्य का फलक बहुत विस्तृत है। यह साहित्य अपने अंदर बहुत सारे बदलावों को समेटे हुए है। इस समय के साहित्य के माध्यम से लेखकों ने समाज के हाशिए पर स्थित वर्ग को अपने लेखनी के माध्यम से दिखाने का काम किया है। हाशिए पर स्थित समाज में अगर सबसे ज्यादा दंश किसी समाज विशेष को झेलना पड़ता है, तो वह किन्नर समाज ही है। हमारा मानव समाज स्त्री और पुरुष दो लिंगों पर आधारित समाज है। इस द्विलिंगी समाज में ही स्थित एक तृतीय लिंगी समाज भी है, जिन्हें हिजड़ा, ख्वाजा, मंगलामुखी, किन्नर आदि नामो से पुकारा जाता है। उन्हें हम अपने समाज का अंग मानना नहीं मानते हैं। किन्नरों के साथ हम आम मनुष्य जानवरों से भी बदतर सलूक करते हैं। किन्नर समाज जन्म से ही अभिशप्त जीवन जीने को विवश हैं। हार्मोन के असंतुलन के कारण इनके शरीर में कुछ कमियाँ आ जाती है, जो जीवनपर्यंत इन्हें भयानक रूप से प्रभावित करती है। किन्नर अपने आप को स्त्रियों के ही सन्निकट महसूस करते हैं। लैंगिक विकृति के कारण इनका शरीर इस लायक नहीं रहता है कि अपनी संतति को आगे बढ़ाएँ। इनमें एक स्वस्थ महिला की तरह गर्भाशय का अभाव पाया जाता है, लेकिन महिलाओं में उपस्थित बहुत सारे गुण इनमें भी मौजूद होते हैं। इनमें भी स्त्रियों की तरह ममता, करुणा आदि गुण समाहित है, लेकिन इनका दुर्भाग्य ऐसा होता है कि इन्हें थोड़ी सी भी इज्जत कभी नसीब नहीं होती है। आज बहुत से माता-पिता ऐसे हैं कि लड़कों के जन्म के कारण लड़कियों को हानि पहुँचाने में तनिक भी गुरेज नहीं करते हैं। लड़के प्राप्त करने के कारण लड़कियाँ घर में ही मारी जा रही है, लेकिन इन सबसे अलग अगर किन्नर संतानोत्पत्ति नहीं कर सकते हैं, तो कम से कम इस पाप के भागी भी तो नहीं बनते हैं। बेटों की चाह में बेटियों का गला तो नहीं घोटते हैं, लेकिन चाहे इनमें कितनी भी अच्छाई क्यों न आ जाए, लोगों का नजरिया इनके प्रति कभी नहीं बदलता है। आज समय के साथ इनके प्रति व्यवहार में थोड़ा बहुत अंतर देखने को मिलता है, लेकिन यह अंतर वर्तमान समय में पर्याप्त नहीं कहा जा सकता।

कूटशब्द: किन्नर विमर्श का आधार, शारीरिक, मानसिक उत्पीड़न

प्रस्तावना
समाज की इन्हीं विसंगतियों को अपने साहित्य के माध्यम से सामने रखकर कई साहित्यकारों ने हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट करने का सफल प्रयास किया है। ऐसे ही कहानीकारों में राकेश शंकर भारती इस क्षेत्र के शायद पहले ऐसे प्रवासी कहानीकार है,

जो स्वदेश की धरती से बाहर विदेश की धरती यूक्रेन में रहकर भी किन्नर समाज की बेहतरी के लिए लगातार प्रयासरत है। भारती जी द्वारा रचित कहानी संग्रह 'इस जिंदगी के उस पार' पूरी तरह से किन्नरों के ऊपर ही रचित है। इसमें भिन्न - भिन्न प्रकार के माहौल को उपस्थित कर लेखक ने उनके जीवन में उपस्थित अनेक विसंगतियों को हमारे सामने रखने की एक सफल कोशिश की है। भारती जी के द्वारा रचित 'इस जिंदगी के उस पार' कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानी संकलित है, जो किन्नर जीवन के हरेक पहलू से हमारा साक्षात्कार कराती है। एक थर्ड जेंडर बच्चे को जन्म के बाद से ही किन-किन शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न से गुजरना पड़ता है, इन कहानियों के माध्यम से हम बखूबी देख सकते है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'मेरे बलम चले गए' सुशीला किन्नर और प्रदीप की कहानी है। सुशीला का जन्म एक सामान्य लड़की के जैसे न होकर एक किन्नर के रूप में होता है। सुशीला अपने दो भाइयों से बड़ी माता-पिता की पहली संतान है। इस कारण उसे अपने माता-पिता, दादा-दादी से तो बहुत स्नेह मिलता है, लेकिन समाज के ताने, उनके उलाहनों से वह खुद को बचा नहीं पाती है। एक किन्नरी के रूप में जन्म लेने के कारण अपने बचपन के प्यार प्रदीप से भी उसे दूर होना पड़ता है। सुशीला बिल्कुल अपने नाम के जैसी सुशील और बड़ी-बड़ी आँखों वाली सुंदरी की तरह थी। उसे देखने वाली हरेक आँखें कुछ देर के लिए ठहर सी जाती थी। इतनी गुणी होने के बावजूद भी वह सामान्य लड़की की तरह अपने सपने को पूरा नहीं कर सकी। पढ़ने में काफी होशियार होकर भी लोगों के ताने और बुरी नजर के कारण दसवीं के बाद उसे अपनी पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। सुशीला के भी कुछ सपने थे कि परिवार में बड़ी संतान होने के नाते वह खूब अच्छे से पढ़े। अच्छी नौकरी करें और अपने माता - पिता और भाइयों का सहारा बने। एक किन्नर के रूप में जन्म लेने के कारण जब प्रदीप से उसकी शादी नहीं हो पाती है, तो वह प्रदीप से कहती है-

"प्रदीप, मुझे लगता है कि अपना समाज, तेरे मम्मी - पापा और रिश्तेदार कभी भी हम लोग दोनों के रिश्ते को स्वीकार नहीं कर सकते हैं। पता है क्यों, क्योंकि मैं एक किन्नरी, हूँ?" [1]

प्रदीप से दूरी और परिवार का अपने प्रति दोयम व्यवहार को वह सहन नहीं कर पाती है और उसके बाद सुशीला हिजड़ों की मंडली में शामिल हो जाती है। वह उन रस्मों - रिवाजों और परंपराओं में भी खुशी - खुशी शामिल होने लगती है, जो उनके जैसे लोगों की परंपरा थी, लेकिन अगर वह मंडली में शामिल होने की बजाय अपने आप को काबिल बनाने में समय लगाती, तो दुनिया की कोई भी ताकत उससे उसके अधिकारों को नहीं छीन सकती थी, लेकिन उसने वैसा नहीं किया, बल्कि अपनी जिंदगी को उस दलदल की ओर धकेल दिया, जहाँ से वापसी बहुत कम ही किन्नरों के लिए संभव हो पाती है।

दूसरी कहानी 'मेरी बेटी' एक ऐसी लड़की की कहानी है, जिसका नाम तो उसके माता-पिता ने राधिका रखा था, लेकिन सब उसे मुन्नी कह कर बुलाते थे। ऐसे तो भगवान ने मुन्नी को रात के अँधेरे में इस धरती पर भेजा था, लेकिन जो रूप उसे दिया था, उससे उसे रात का अँधेरा भी बचा नहीं पाया था। बचपन से लेकर उम्र के छहः साल तो जैसे- तैसे गुजर गए, लेकिन एक दिन सच्चाई सब लोगों के सामने आई, तो लोगों ने उसके जीवन को भी अंततः नर्क बना ही दिया। अन्य लोगों की बात तो दूर है, उसके खुद के परिवार ने भी उसका साथ देना जरूरी न समझ कर उसे अपने आप से भी दूर कर दिया। मुन्नी को जो प्यार और अपनापन अपने माता-पिता परिवार और समाज से मिलना चाहिए था, वह उसे कभी नहीं मिला। अपने भाइयों की तरह वह भी प्यार पाने की हकदार थी, लेकिन उसे गुरु के हाथों में आकर गाजियाबाद की सड़कों पर भीख माँगना पड़ा। मुन्नी हमेशा सोचती थी कि -

> "काश ! मैं आज आम बच्चों की तरह पैदा लेती, तो आज मैं इस सड़क पर भीख नहीं माँग रही होती। आज दोनों भाइयों की तरह मैं भी स्कूल जाती। पढ़ - लिख बड़ी होकर अच्छी नौकरी करती और अपने भाइयों और माता-पिता की मदद भी करती। समाज में मुझे भी आम लोगों की तरह इज्जत मिलती। इस समाज में मेरे माता-पिता का सम्मान भी बढ़ता। उन्हें भी मेरी सफलता पर गर्व होता।" [2]

भीख माँगने के क्रम में ही मुन्नी की मुलाकात एक डॉक्टर दंपति से होती है। निःसंतान होने के कारण वह मुन्नी को अपने घर ले जाना चाहते थे और मुन्नी भी अपनी जिंदगी को एक मौका देना चाहती थी, इसलिए वह उनके साथ जाने को तैयार हो जाती है। एक बेटी की तरफ पाल पोसकर डॉक्टर दंपति एक भीख माँगने वाली राधिका को डॉक्टर राधिका बनाते हैं। शल्य चिकित्सा की मदद से वह अपने अभिशप्त जीवन को भी त्याग देती है। यहाँ लेखक ने हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया है कि किस तरह से एक स्वच्छ वातावरण एक अच्छी मानवता को जन्म दे सकती है। अगर माहौल और मौके सही ढंग से मिले, तो कोई भी इंसान अपने आप को सफल सिद्ध करने से पीछे नहीं हट सकता है। अगर हर माता-पिता उस डॉक्टर दंपति की तरह सोचने लगे, तो भविष्य में शायद कोई भी किन्नर राधिका, डॉ राधिका बनने के सपने से वंचित नहीं हो पाएगी।

तीसरी कहानी 'दयाबाई' भी एक ऐसी थर्ड जेंडर लड़की दया की कहानी है, जिसका जन्म मेरठ के एक ब्राह्मण परिवार में होता है, लेकिन उसके माता-पिता जन्म के बाद ही उसे गुरु के हाथों सौंप देते हैं। दयाबाई की माँ उसे अपने आपसे कभी अलग नहीं करना चाहती थी, लेकिन एक स्त्री कभी-कभी इतनी बेबस हो जाती है कि वह चाह कर भी कुछ नहीं कर पाती। दयाबाई के लिए उसका हरेक रिश्ता उसके गुरु से ही है। एक किन्नर गुरु और चेले के बीच जो प्रेम की प्रगाढ़ता है, उसमें एक माता-पिता, भाई-बहन, गुरु चेला सभी प्रकार के प्यार समाहित है। जब वह सोचती है, तो उसे लगता है कि

> "गुरु नहीं होते तो इस दुनिया में मेरा क्या हाल होता, मेरे साथ यह समाज क्या सुलूक करता। मैं अभी कहाँ रहती? क्या मेरे मां-बाप मुझे गंगा में बहा देते, ताकि उनके पाप धूल सके और पूर्वजन्म के कुकर्म धुल सके।" [3]

परिवार से दूर गुरु के साथ रहने के बाद भी दया की हार्दिक इच्छा थी कि जीवन में एक बार अपने परिवार से वह जरूर मिले। गुरु लक्ष्मीबाई का जब भी मेरठ जाना होता था, तो वह दयाबाई को भी अपने साथ ले जाती थी, ताकि वह अपने परिवार से मिल सके। दयाबाई के घर में उसके अलावा दो भाई और एक बहन थी। एक बार जब वह मेरठ जाती है, तो उसे पता चलता है कि उसकी भतीजी की शादी है, तो वह चाहती है कि वह कैसे भी अपने भाई की मदद जरूर करेगी। मेरठ से वापस गाजियाबाद आने के बाद उसके भाई का फोन भी आता है कि शादी के लिए उसे कुछ आर्थिक मदद की जरूरत है। ऐसा सुन वह उसे मदद करने का वादा करती है और करती भी है। खुद उसके शादी में भी जाती है, लेकिन जब खुद के भाई के मुँह से लोगों को यह कहते सुनती है कि गाजियाबाद से हिजड़ों की टोली को उसने नाचने बुलाया है, तो वह टूट जाती है। उसे अब कुछ भी सुनने की जरा सी भी हिम्मत नहीं बचती है और वहाँ से वह हमेशा के लिए गाजियाबाद वापस चली आती है। इस तरह से यह कहानी स्वार्थपरता के कारण इंसानियत खोती हुई दिखाई देती है। बदनाम करने को तो लोग किन्नरों को करते हैं, लेकिन उस समय मनुष्य यह भूल जाते हैं कि कम से कम उनके हमारे जैसे स्वार्थपरता नहीं होती है। भले हम उन्हें कितना भी अपमानित कर ले, हम अपने कर्तव्य से भले पीछे हट जाए, लेकिन एक किन्नर समाज कभी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं होते हैं।

चौथी कहानी 'रक्तदान' एक थर्ड जेंडर विमल की कहानी है। विमल का जन्म अपने तीन बहनों के बाद कमल के साथ जुड़वा भाई के रूप में होता है। छोटे भाई विमल के रूप में जन्म लेने के बाद भी विमल का दिल एक लड़की की तरह होता है। भगवान ने उसे शरीर तो एक मर्द का दिया था, लेकिन उसकी आत्मा में एक औरत बसती थी। बचपन से लेकर उम्र के आठ साल जब तक वह घर से भागती नहीं है, तब तक उसे शारीरिक व मानसिक दोनों तौर पर अपने परिवार में काफी उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। कितनी ही बार अपने से बहुत अधिक उम्र के लोगों द्वारा मानसिक उत्पीड़न और यौन उत्पीड़न का शिकार भी होना पड़ता है, लेकिन जब वह अपने जन्म स्थान से भागकर गीताबाई गुरु के पास पहुँचती है, तो उसे लगता है कि गीताबाई उसके लिए फरिश्ता से कम नहीं है। गीताबाई के रूप में उसे माता - पिता, बड़ा भाई सबका प्यार मिलता है। हिजड़ों की मंडली में

शामिल होने के बाद गीताबाई अपने खून का दान देकर न जाने कितने ही लोगों की जान भी बचाती है। जिस परिवार के उत्पीड़न से वह खुद भाग कर आई थी, उसी परिवार के अपने भतीजे के लिए भी वह रक्तदान देती है। अपने भाई कमल के फोन के जवाब में वह उससे कहती है,

> "भाई, मैं अभी आ रही हूँ। मेरा ब्लड ग्रुप ओ मायनस है। हर साल मैं रक्तदान करती हूँ। अपने भतीजे को हर हाल में मरने नहीं दूँगी।" [4]

गीताबाई अस्पताल जाकर अपने भतीजे को रक्तदान देती है और उसके स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना भी करती है, लेकिन इतना करने के बाद भी जब वह उसी भतीजे से मिलने अपने गाँव जाती है, तो बहाना बनाकर उसे उससे मिलने नहीं दिया जाता है। इस तरह से यह कहानी हमें यह एहसास दिलाती है कि अपना सब कुछ खोकर भी गीताबाई जैसी किन्नर सफल हो जाती है और हमारे जैसे संभ्रांत लोग सब कुछ पाकर भी हार जाते हैं।

'रामवृक्ष दादा की याद में' एक समलैंगिक दादा और पोते की कहानी है। इस कहानी में दस साल के एक लड़के मुरली और साठ साल के दादा रामवृक्ष की समलैंगिकता को दिखाया गया है। मुरली जो कि एक भरा पूरा मर्द है, लेकिन उसकी दिलचस्पी औरतों में न होकर मर्दों में रहती है। वैसे तो मुरली के कई लड़कों से संबंध रहे थे, लेकिन उसे जैसा सुख अपने दादा के सबसे छोटे भाई रामवृक्ष दादा से मिला, वैसा उसे अपनी परी जैसी सुंदरी पत्नी रुक्मिणी से भी नहीं मिला। जब भी रुक्मिणी उसके सामने होती, तो वह सोचता था कि,

> "काश ! आप मुझे रुक्मिणी बना देते और मेरी पत्नी रुक्मिणी को मुरली बना देते, तो कितना अच्छा होता। इससे हम दोनों की जिस्मानी प्यास अच्छी तरह से बुझ जाती।" [5]

शादी के बाद भी मुरली एक समलैंगिक की तलाश में हमेशा भटकता रहा। पत्नी के होते हुए भी एक पुरुष की याद में विचलित होना इस कहानी की समलैंगिकता को बढ़ावा देती दिखाई देती है।

अगली कहानी 'सौतन' भी समलैंगिकता पर आधारित कहानी है। इस कहानी में एक ऐसे लड़के जैकी की कहानी है, जिसे अपने ही शादीशुदा मकान मालिक शैलेश से प्यार हो जाता है। यह प्यार एक रूह आत्मा का प्यार न होकर शारीरिक भूख थी, जो कि न सिर्फ जैकी बल्कि शैलेश की तरफ से भी थी। शैलेश की पत्नी कल्याणी जो कि एक भोली भाली औरत थी, उसे जब अपने पति के हरकतों का पता चलता है, तो उसे लगता है, जैसे जैकी उसका किरायादार न होकर उसका सौतन है। वह शैलेश से कहती है -

> "क्या तुझको मेरी बात समझ में नहीं आती है? अगर कल से जैकी के कमरे में अपना एक पाँव भी रख दिया, तो मैं उसका सारा सामान कमरे के बाहर गली में निकाल कर फेंक दूँगी। ऐसे भी नहीं सुधरोगे, तो तेरे इस हरकत के बारे में सारे रिश्तेदारों, दोस्तों और पड़ोसियों को बता दूंगी।" [6]

सौतन कहानी एक ऐसे पुरुष वर्ग से हमारा साक्षात्कार कराती है, जिनके लिए उनका परिवार, बच्चे किसी भी चीज की कोई अहमियत नहीं है। अगर उसके लिए कोई चीज सबसे ज्यादा जरूरी है, तो वह उसकी वासना है, जिसके लिए वह कुछ भी करने, कहीं भी जाने से गुरेज नहीं करता है।

'फ्रेंड रिक्वेस्ट' कहानी एक पंजाबी लड़की जसप्रीत और पंजाबी लड़के हरविंदर की कहानी है। जसप्रीत जब एम. ए. फस्ट ईयर की छात्रा रहती है, तभी उसकी मुलाकात एक टैक्सी ड्राइवर हरविंदर से कॉलेज आने - जाने के दरमियान होती है। शादी करके दोनों साथ-साथ रहने लगते हैं, लेकिन शादी के सात वर्षों के बाद भी उन्हें संतान का सुख नसीब नहीं होता है। जब वह डॉक्टर के पास पहुँचकर इलाज करवाते हैं, तो उस दौरान पता चलता है कि जसप्रीत जो कि एक सामान्य लड़की से कई गुना ज्यादा सुंदर थी, वह एक सामान्य लड़की न होकर एक किन्नर है।

> "जसप्रीत जी, दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आप एक किन्नर हैं। इतने सालों से आपको किसी ने नहीं बताया कि आप एक किन्नर हैं। जन्म के

बाद ही पता चल जाना चाहिए था। आपके पेट में बच्चा दानी नहीं है।" [7]

जिस सच्चाई से उम्र के 32 साल वह दूर रहती है, उस कमी को हरविंदर सहन न कर उसे छोड़ देता है, लेकिन वह एक किन्नर होकर भी अपने जीवन ऐसे ही बर्बाद नहीं करती है, बल्कि शिक्षिका बनकर अपने सपने को पूरा करती है। यह कहानी भी एक पुरुष के ओछी मानसिकता को हमारे सामने रखती दिखाई दे रही है।

'ट्रांसजेंडर' कहानी एक ऐसे धोखेबाज डॉक्टर देवराज की कहानी है, जो अपने क्लीनिक पर इलाज करवाने आई एक लड़की शालिनी के साथ मिलकर न जाने कितनों के लिंग काटकर उन्हें हिजड़ा बना चुका होता है। शालिनी भी पहले शालिनी न होकर सुरेंद्र था। वह अपने दो बहनों और एक भाई से छोटा माता-पिता का सबसे छोटा संतान था। भगवान के दिए इस पुरुष रूप से प्यार न होकर वह खुद के अंदर एक औरत को देखता था। इसके लिए उसे पिता से कई बार यातनायें भी झेलनी पड़ी थी। अंत मे वह अपने गाँव से भागकर उज्जैन आ जाती है और हिजड़ों की मंडली में शामिल हो जाती है। यहाँ एक गुरु के द्वारा ही उसका बधिया कराकर उसे पुरुष सुरेंद्र से शालिनी बना दिया जाता है। उज्जैन में ही उसकी मुलाकात देवराज से होती है और डॉक्टर के साथ मिलकर वह लोगों को बहला-फुसलाकर उन्हें हिजड़ा बनाने के काम में लग जाती है, लेकिन भगवान का संयोग कहे, तो देवराज के पुत्र राधेश्याम, जिसे देवराज ने डॉक्टरी की पढ़ाई कराई थी, वह भी अंदर से ट्रान्स व्यक्ति था। वह भी अपने दोस्त चाँदनी, जिसे जबरदस्ती देवराज ने ही लिंग काटकर एक मर्द से हिजरा बनाया था, के साथ मिलकर किसी डॉक्टर की सहायता से लिंग परिवर्तन करा कर लड़की बन जाता है। अपने बेटे को देख डॉ देवराज बेसुध से हो जाते हैं। डॉक्टर देवराज के वीरान आँखों को देखकर चाँदनी कहती है -

"डॉक्टर साहब,यह जिंदगी बड़ी रहस्यमय है। पता नहीं कब किसको वीरान करके चली जाती है।" [8]

यह कहानी एक चक्र में घूमती हुई दिखाई देती है। यह 'जैसे को तैसा' वाली कहावत को सिद्ध करती हुई यह दिखाने का प्रयास करती है कि चाहे हम अपनी तरफ से कितनी भी होशियारी और चालाकी क्यों न कर ले, लेकिन हमारे द्वारा किया गया गलत कार्य कभी न कभी हमारे पास लौट कर जरूर आता है।

'बधिया' कहानी एक लड़का जनार्दन और उसके पड़ोस में रहने वाली सुष्मिता के बचपन, उनके साथ में स्कूल जाने और उनके दरमियान उठे हुए दो तरफा प्यार की कहानी है। जनार्दन वैसे तो एक सामान्य बालक था, लेकिन जब से उसका झुकाव हिजड़ों की मंडली की तरफ होता है, वह सामान्य लड़का नहीं रह जाता है। नाचने - गाने से लेकर वह औरतों के साज - श्रृंगार भी करने लगता है और एक दिन हिजड़ों की मंडली द्वारा उसका बधिया कर उसे ज़बरदस्ती हिजड़ा बना दिया जाता है। इस दुख से दुखी हो कर वह कौशल्या से कहता है -

"मेरे साथ तूने ऐसा क्यों किया ? किस गलती के लिए मुझे इतनी बड़ी सजा दी है ? अब मैं कहीं का नहीं रहा। न ही घर का, न ही घाट का।" [9]

यह कहानी पूरे संग्रह की एकमात्र ऐसी कहानी है, जो किन्नरों की नकारात्मकता को हमारे सामने रखती दिखाई देती है।

'तीन रंडियाँ' शरीर व्यापार में लिप्त तीन सहेलियों की कहानी है, जिसमें से एक किन्नर अर्जुन और दो लड़कियां पारुल और संध्या है। देह व्यापार करने के दौरान ही पारुल गर्भवती हो जाती है। वह अपने बच्चे को गिराना चाहती है, लेकिन अर्जुन जिसने घर से भागने के बाद ही अपना नाम बदलकर द्रौपदी कर लिया था, वह कैसे भी करके उसे बच्चा गिराने से रोकती है। पारुल बच्चे को जन्म तो दे देती है, लेकिन माँ का प्यार उसे द्रौपदी से ही मिलता है। द्रौपदी गुड़िया को अपने बच्चों की तरह पालती है। उसे शिक्षा देती है और अच्छे लड़के के साथ उसकी शादी करती है। द्रौपदी गुड़िया के अपनापन देखकर कहती है,

"बेटी, ऐसी कोई बात नहीं है। जाको राखे साईया, उसे मार सके न कोई। तुम जहाँ भी रहो, खुश रहो। तुम्हारा घर भरा -भरा सा रहे। तेरी चैखट पर हमेशा बरकत हो, तेरे जीवन में खुशियों का मेला हो।" [10]

लोग तो न जाने किन्नर के साथ कैसा कैसा बर्ताव करते है, गुड़िया जिसे उसके खुद की माँ ने जन्म देने के बाद ही छोड़ दिया था, उसका जीवन भी एक किन्नर की वजह से सफल हो पाता है।

अंतिम कहानी 'इस जिंदगी के उस पार' कहानी एक लंबी कहानी है, जो एक थर्ड जेंडर की जमीनी हकीकत से हमारा परिचय कराती है। बस शरीर में एक कमी के कारण एक इंसान को जीवन में कितना बेबस होना पड़ता है, इस बात को यह कहानी बखूबी बयाँ करती है। अपने पेट को भरने के लिए इन्हें काफी कम कीमत में अपने शरीर तक को बेचना पड़ता है। इस कमाई में भी उन्हें उसका कुछ हिस्सा गुरु को देना पड़ता है, तो कुछ पुलिसवालों को देना पड़ता है। इन सबसे अलग उन्हें ग्राहकों का जोर जबरदस्ती भी सहना पड़ता है। किन्नरों के लिए जिंदगी कभी भी आसान नहीं होती है, बल्कि नित ही उन्हें नए-नए संघर्षों से गुजरना पड़ता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार समकालीन साहित्य में किन्नरों के बेहतरी के लिए काफी मात्रा में साहित्य लिखा जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें शिक्षा के प्रति सजग किया जा रहा है, ताकि वे लोग शिक्षा के महत्व को समझे और शिक्षित होकर एक बेहतर जीवन जी सके। देह व्यापार और भीख माँगने से अलग हटकर भी जिंदगी को जी सके और परिवार और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझ सके। इन सब कार्यों के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम उनसे समानता का भाव कायम करें। किसी भी प्रकार से कोई भी ऐसा कार्य न करें, जो उन्हें खुद को हीन समझने के लिए विवश करता हो। जब भी हमारी संतान इस पृथ्वी पर आए, तो वह चाहे जिस भी रूप में हो, लेकिन हम उन्हें उतना ही प्यार और ममत्व दे, जितना एक माता-पिता की हैसियत से हमें देनी चाहिए। तभी जाकर उनके और हमारे बीच बनी यह खाई खत्म होगी और वह भी हम पर विश्वास करने को बाध्य सकेंगे।

संदर्भ

1. राकेश शंकर भारती - 'इस जिंदगी के उस पार' - 'मेरे बलम चले गए' (पृष्ठ-19), - अमन प्रकाशन, कानपुर
2. वही, 'मेरी बेटी '; पृष्ठ - 30
3. वही, 'दयाबाई '; पृष्ठ - 38
4. वही, 'रक्तदान '; पृष्ठ - 56
5. वही, 'रामवृक्ष दादा की याद में '; पृष्ठ - 68
6. वही, 'सौतन '; पृष्ठ - 80
7. वही, 'फ्रेंड रिक्वेस्ट '; पृष्ठ - 91
8. वही, 'ट्रांसजेंडर '; पृष्ठ - 109
9. वही, 'बधिया '; पृष्ठ - 121
10. वही, 'तीन रंडियाँ '; पृष्ठ - 133